ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

परिचय

“यीशु बैठ गए उस स्थान के सामने जहाँ अर्पण रखा जाता था और लोगों को यह देखकर देखा कि वे अपने पैसे मंदिर की कोष्ठी में
डाल रहे हैं। कई धनी लोग बड़ी राशि डालते थे। लेकिन एक गरीब विधवा आई और केवल दो छोटे तांबे के सिक्के डाले, जो कुछ ही
पैसे के थे।”
— मरकुस 12:41–42 (NIV)

ईश्वर के सामने सबसे महान और मूल्यवान अर्पण हमारा जीवन है। जब हम अपना जीवन यीशु मसीह में विश्वास करके, संसार का परित्याग करके, उसके आदेशों के अनुसार जीवन जीकर और उसके राज्य के लिए कार्य करके ईश्वर को अर्पित करते हैं, तो यह सबसे उच्च रूप का अर्पण बन जाता है—यह हमारे भौतिक पदार्थों से कहीं अधिक ईश्वर को प्रिय होता है।

इस जीवन के अर्पण के साथ अनमोल पुरस्कार आते हैं। सबसे बड़ा पुरस्कार है अनन्त जीवन, यानी इस जीवन से परे हमेशा के लिए जीना। आप 80, 90 या 100 धरती वर्ष देते हैं—और बदले में अनंतकाल का जीवन प्राप्त करते हैं, जिसमें उम्र बढ़ना, पीड़ा, कठिनाई या दर्द नहीं होता।

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

इसलिए, अपने जीवन को ईश्वर को अर्पित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि ईश्वर का सबसे महान अर्पण हमें उसके पुत्र का जीवन था। इसलिए हम जो सबसे बड़ा अर्पण दे सकते हैं, वह हमारा अपना जीवन है।

संपत्ति का अर्पण

एक और महत्वपूर्ण अर्पण हमारी संपत्ति का है। जब हम ईश्वर के लिए अपनी धनराशि देते हैं, तो हम इस जीवन में भी आशीषों के लिए एक पुल बनाते हैं।

अक्सर लोग पूछते हैं: “मैं ईश्वर को कितना दूँ?”
उत्तर है: जो कुछ भी दोषरहित हो।

“लेकिन जब तुम अंधे जानवरों को बलि के लिए अर्पित करते हो,
तो क्या यह सही नहीं है? जब तुम लंगड़े या बीमार जानवर
अर्पित करते हो, तो क्या यह सही नहीं है? इन्हें अपने राज्यपाल को अर्पित कर के देखो! क्या वह इससे प्रसन्न होगा? क्या वह इसे स्वीकार करेगा?”
— मलाकी 1:8 (NIV)

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

दोषरहित अर्पण का अर्थ है ऐसा कुछ देना जो संपूर्ण और श्रेष्ठ हो। दोषपूर्ण अर्पण देना ईश्वर के प्रति अनादर है। ब्रह्मांड और आकाश का निर्माता अवशेषों का अधिकारी नहीं है—उसे केवल श्रेष्ठतम चाहिए।

दोषपूर्ण अर्पण का उदाहरण: आपने 200,000 शिलिंग कमाए लेकिन केवल 1,000 ईश्वर को दिए। बाकी का उपयोग आपने अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए किया।

दोषरहित अर्पण: आपने 5,000 शिलिंग कमाए और 2,000, 3,000, 4,000 या पूरी 5,000 ईश्वर को दिए। दोनों लोग समान राशि दे सकते हैं, लेकिन किसी का अर्पण दोषपूर्ण हो सकता है यदि यह उनकी आय के स्तर के अनुरूप न हो।

भावनाओं को अर्पण में शामिल न करें

यह एक महत्वपूर्ण पाठ है: अर्पण में भावनाओं को शामिल न करें। कई लोग देते समय अपने या दूसरों के प्रति दया महसूस करते हैं। लेकिन ईश्वर की व्यवस्था में, भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है।

यदि आपने योजना बनाई है कि अपने 5,000 शिलिंग का पूरा अर्पण

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

देंगे, तो इसे दें। अपने लिए पछतावा मत करें या यह मत सोचें, “मैं क्या खाऊँगा? मेरे पास क्या बचेगा?” यदि आप दया की भावना से प्रेरित हैं, तो बेहतर है कि आप कुछ न दें। ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं का कोई स्थान नहीं है—आप या तो दें या नहीं।

आइजैक को अर्पित करने वाले अब्राहम का उदाहरण देखें (उत्पत्ति 22): उन्होंने अपने भावनाओं को रोक कर आज्ञाकारिता दिखाई।

इसी प्रकार, जब एलियाह ने ज़रेफ़थ की विधवा से कहा:

“पर पहले अपने पास जो है, उससे मेरे लिए एक छोटा रोटा बनाओ और मुझे लाओ, फिर अपने और अपने पुत्र के लिए कुछ बनाओ।”
— 1 राजा 17:13 (NIV)

विधवा ने अपनी भावनाओं को त्यागा और ईश्वर के वचन का पालन किया। परिणाम:

“आटे का जार खत्म नहीं हुआ और तेल का बर्तन सूख नहीं गया।”
— 1 राजा 17:16

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

नए नियम में भी यही शिक्षा

“यीशु बैठ गए और देखा कि लोग मंदिर कोष्ठी में पैसे डाल रहे हैं। कई धनी लोग बड़ी राशि डालते थे। लेकिन एक गरीब विधवा ने अपनी संपूर्ण आजीविका—केवल दो छोटे सिक्के—दी। यीशु ने
कहा, ‘सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ, इस गरीब विधवा ने सभी
अन्य लोगों से अधिक दिया। वे सब अपनी संपत्ति से देते थे;
लेकिन उसने अपनी गरीबी से सब कुछ दे दिया।’”
— मरकुस 12:41–44 (NIV)

यह दिखाता है कि अर्पण भावनाओं या वर्तमान परिस्थिति पर निर्भर नहीं होता।

जब ईश्वर ने हमें अपने पुत्र यीशु को दिया, उसने भावनाओं के कारण रोका नहीं, बल्कि दिया:

“जो अपने ही पुत्र को नहीं छोड़ा, परंतु हम सभी के लिए
दिया—तो क्या वह हमें सब कुछ नहीं देगा?”
— रोमियों 8:32 (NIV)

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

इसलिए जब ईश्वर को अर्पित करें, अपने लिए दया मत रखें।

आशीषें और भरोसा

आईज़ैक मर नहीं गया—वह आशीषित हुआ।
एलियाह के समय की विधवा भूखी नहीं रही—वह सूखा में भरी रही।
नए नियम की विधवा को यीशु ने सम्मानित किया।

यह भावनाओं को शामिल किए बिना अर्पण करने की शक्ति है।

यदि आप शैतान की तरह अपनी भावनाओं को प्राथमिकता देते हैं, तो आपको कुछ नहीं मिलेगा।

प्रभु आपको प्रचुर रूप से आशीष दें।

आखिरी आवाहन

यदि आप अभी तक उद्धार प्राप्त नहीं किए हैं, तो अपने जीवन को मसीह को अर्पित करें। ये अंतिम दिन हैं। धार्मिक अहंकार या संप्रदायिक घमंड का समय नहीं है।

“और वह सभी को चिन्ह देगा, और कोई न खरीद सकेगा और न बेच

ईश्वर को अर्पित करने में भावनाओं को शामिल न करें

सकेगा बिना इसके।”
— प्रकाशितवाक्य 13:16–17

यह संदेश दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp